आज की मुरली का सार --- Date: 13-05-2014

बाबा ने कहा, सदा रिफ्रेश रहने का साधन है, स्वदर्शन चक्र फिराना. स्वदर्शन चक्र फिराने से हीं हम चक्रवर्ती राजा बनते है. स्वदर्शन चक्र फिराने वाले सूर्यवंशी बनते हैं.

स्वदर्शन चक्र यानी आत्मा की इस बेहद के सृष्टि रुपी ड्रामा में यात्रा. बाबा ने समझाया है की इस बेहद के ड्रामा में हर आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है. हर आत्मा को अपने समय पर, यानी सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग में परमधाम से यहॉ पार्ट बजाने आना हैं. हर आत्मा को पांच स्टेज से पसार होना हैं, सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो और तमोप्रधान. कलयुग के अन्त में जब सब आत्माये तमोप्रधान हो जाती है तो बाप आकर सब को पावन बनाये, वापस परमधाम ले जाते हैं. इस तरह से ये बेहद का सृष्टि रुपी ड्रामा का चक्र घुमता रहता हैं. अब बाप आये है हम सब को वापस घर (परमधाम) ले जानें. लेकिन उसके पहले, सतयुग-त्रेतायुग में जो आत्माये पार्ट बजाने आने वाली है उसे बाबा को ज्ञान देकर सतयुग-त्रेतायुग के लायक बनाना है. बाबा ने कहा है, सतयुग-त्रेतायुग में पार्ट बजाने आनेवाली सभी आत्माओं को यह बाबा का ज्ञान मिल जायेगा और वह आत्माये अपने पुरुषार्थ अनुसार अपना नंबर ले लेगी तब विनाश होगा और सब आत्माये बाबा के साथ अपने घर, परमधाम जायेंगी, और फिरसे नंबरवार अपने समय पर पार्ट बजाने आयेंगी. इसपर से ये बात क्लियर है की मेरा अभी का पुरुषार्थ ही मुझे आगे नंबर और ऊंच पद सतयुग में दिलाने वाला हैं. इस समय का एक-एक क्षण मेरे लिए, 21 जन्मो का भाग्य बनाता हैं, कितना अमूल्य समय हैं पुरषोतम संगमयुग का. स्वदर्शन चक्र फिराने के अलग-अलग तरीके है, जो नीचे दिये गये हैं.

- **अनादि (आत्मिक स्वरूप परमधाम में) - आदि (देवी-देवता) - पूज्य (द्वापर में मंदिरोमे) - ब्राह्मण (अभी संगमयुग पर साकारी स्वरूप) - फरिश्ता (सुक्ष्मवतन में)**
- **ब्राह्मण - फरिश्ता - ज्योति सितारा (आत्मिक स्वरूप परमधाम में) – देवता**
- **ब्राह्मण - देवता - क्षत्रिय - वैश्य - शूद्र**
- **मन्मनाभव (आत्मिक स्वरूप परमधाम में बाबा के पास) - मध्याजीभव (विष्णु की डायनास्टि)**

मन्मनाभव का मतलब हे, स्वयं को आत्मा समझ, परमप्रिय-परमपिता-परमआत्मा के साथ परमधाम में अपना बुद्धि योग लगाओ. मध्याजीभव का मतलब हे, विष्णु की डायनास्टि यानी सतयुग या बाप से मिलने वाला वरसा को याद करो. एक कहानी हे, छोटे बच्चे को पूछा गया की भविष्य में आप क्या बनोगे, तो उसने फट से जवाब दिया में कोम्पुटर इन्जीनियर बनूंगा ओर सच में जब वो बडा हुआ और कोम्पुटर इन्जीनियर बना. ये तो एक जनम की बात हे, बाबा हमें आने वाले सतयुग में हमारा क्या पार्ट हे इसे मन-बुद्धि से विस्युलाईस करने का सिखा रहे हैं. अगर हम अपनी बुद्धि में सतयुग का हमारा उँचा पार्ट देखते हे और उसके जैसा बनने का पुरुषार्थ करेंगे तो हम जरूर वह पार्ट बजाने सतयुग में आयेंगे. में नीचे बताया हुआ स्लोगन बार-बार मनो-मन याद करता हूं ओर बाबा मुझे बहुत अच्छे अनुभव करवाते हे.

बाबा के पास जाना हे, फिर श्रीकृष्ण के साथ आना हे. ॐ शांति.